पवित्र आत्मा

हमारा घनिष्ठ मित्र

फ्रैंकलीन द्वारा नोट्स

1. यूहन्ना 14:16–17 "सहायक"

(युनानी : पाराक्लेटोस) सहायता के लिए निकट बुलाया गया।

क. एक मित्र आपसे प्रेम करता है, सहायता करता है : नीतिवचन 17:17 ; 18:24 ; यूहन्ना 15:15

ख. एक मित्र वह है जिससे आप बात करते है। 2 कुरिन्थियों 13:14

ग. वह कैसे बात करता है ?

1. रोमियों 8:16 — आपके हृदय में जानकारी
2. इब्रानियों 10:15–17 — पवित्र शास्त्र के द्वारा
3. प्रेरितों के काम 2:16–17 — भविष्यवाणी – दर्शन – स्वप्न — हबक्कूक 2:1–3
4. 1 कुरिन्थियों 2:9–12 — प्रकाशन — यूहन्ना 16:13–14

2. यूहन्ना 14:17 "...... तुम उसे जानते हो "

ए.डब्लु. टोज़र – " अधिकतर मसीही कलिसियाओं में पवित्र आत्मा को पूरी तरह अनदेखा कर दिया जाता है, चाहे वह उपस्थित हो या नहीं, उनको इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।"

अधिकतर सभी मसीहीयों ने पवित्र आत्मा के विषय सुना है। परन्तु क्या आप उसे जानते हैं ? एक सच्चा परमेश्वर जिसे जाना जा सकता है तथा घनिष्ठ सम्बन्ध में प्रेम ओर आराधना की जाती है।

शब्द "जानते" का यहां अर्थ है, ज्ञान जो अनुभव से आता है, सिर्फ बुद्धि का नहीं (जो आप जानते हो)

किसी के बारे में जान लेना एक बात है, परन्तु यह बिलकुल अलग बात है कि आप उसे व्यक्तिगत रीति से जानें।

क. पवित्र आत्मा एक आत्मिक व्यक्ति है – अलग और भिन्न

1. अपना मन और इच्छा है — रोमियों 8:27 ; 1 कुरिन्थियों 12:11

2. शोकित हो सकता है (मानसिक वेदना)	इफिसियों 4:20
3. बुझाया जा सकता है	1 थिस्सलुनीकियों 5:19
4. विरोध किया जाता है	प्रेरितों के काम 7:51
5. अपमानित हो सकता है	इब्रानियों 10:29
6. उससे झूठ बोला जा सकता है	प्रेरितों के काम 5:3
7. उसके विरुद्ध निन्दा	मरकुस 3:28–29
8. यीशु उसके प्रति बहुत सुरक्षात्मक है	याकूब 4:4–5

ख. पवित्र आत्मा प्रभु और परमेश्वर है

2 कुरिन्थियों 3:17 ; यूहन्ना 4:24 ; प्रेरितों के काम 5:3–4

1. सर्व उपस्थित	भजन संहिता 139:7–10 (आत्माएं नहीं होती)
2. सर्व शक्तिमान	यूहन्ना 6:63 ; 2 कुरिन्थियों 3:6 ; अय्यूब 33:4
3. सर्व ज्ञानी	1 कुरिन्थियों 2:9–12
4. अनन्त	इब्रानियों 9:14

आप परमेश्वर/ पवित्र आत्मा के मंदिर हो। 1 कुरिन्थियों 3:16–17
क्या वह इस प्रकार पहचाना जाता है ? स्वीकार किया जाता है ? क्या उसकी आराधना होती है ?

3. यूहन्ना 14:17 “... तुम्हारे साथ ... तुम में...”

रोमियों 8:9 ; 1 कुरिन्थियों 3:16–17 ; 2 कुरिन्थियों 4:7

क. आप में कौन है ?

1.	मत्ती 10:20	पिता का आत्मा
2.	प्रेरितों के काम 16:7	यीशु का आत्मा
3.	रोमियों 8:9	परमेश्वर का आत्मा
4.	रोमियों 8:9	मसीह का आत्मा। 1 पतरस 1:11
5.	गलातियों 4:6	उसके पुत्र का आत्मा
6.	फिलिप्पियों 1:19	यीशु मसीह का आत्मा
7.	रोमियों 1:4	पवित्रता का आत्मा
8.	इब्रानियों 10:29	अनुग्रह का आत्मा
9.	1 पतरस 4:14	महिमा का आत्मा
10.	यूहन्ना 16:13	सत्य का आत्मा
11.	रोमियों 8:15	लेपालकपन का आत्मा
12.	रोमियों 8:2	जीवन का आत्मा
13.	2 कुरिन्थियों 4:13	विश्वास का आत्मा

ख. पवित्र आत्मा का शब्द चित्रण

अकसर सत्य को मात्र शब्दों में बता पाना कठिन हो जाता है। प्रतीक या चित्रण महत्वपूर्ण ज्ञान की परतें खोलने में सहायता करते हैं।

1. अग्नी : एक विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा की भस्म, शुद्ध कर देनी वाली सामर्थ्य को बतलाती है। लूका 3:16 ; प्रेरितों के काम 2:3 ; यशायाह 6:1–7

2. हवा : यह पवित्र आत्मा के अनदेखी कोमलता को बतलाती है जो पत्ते को उड़ाती है, या फिर वृक्ष को उखाड़ फेंकती है। यूहन्ना 3:8 ; "एक प्रचंड आंधी" प्रेरितों के काम 2:2 ।

3. जल : यह पवित्र आत्मा की धो देने / साफ कर देने वाली सामर्थ्य को बतलाती है जो विश्वासी को उमड़ते हुए आत्मिक जीवन से भर देता है।
1 कुरिन्थियों 6:11 ; तीतुस 3:5 ; यूहन्ना 7:37–39

4. मोहर : यह विश्वासी के ऊपर पवित्र आत्मा के स्वामित्व को बतलाती है। यह अनन्त काल का, पूरा हुआ कार्य है। इफिसियों 1:13

5. तेल : यह सेवकाई और / या चंगाई की सामर्थ्य के लिए पवित्र आत्मा के अभिषेक के विषय में बतलाता है। प्रेरितों के काम 10:38 ; मरकुस 6:13

6. कबूतर : यह उसके कोमल, नम्र, शान्त स्वभाव को बतलाता है। लूका 3:22

4. यूहन्ना 14:26 आपका शिक्षक

क. आपको सिखाता है :

1. बाइबल	2 पतरस 1:21
2. प्रार्थना करना	रोमियों 8:26–27 ; इफिसियों 6:18
3. जो परमेश्वर ने दिया है	1 कुरिन्थियों 2:9–16
4. आने वाली बातें	1 इतिहास 12:32 ; यूहन्ना 16:13
5. कैसे सेवा करें	1 कुरिन्थियों 2:4–5
6. क्या कहना है	मत्ती 10:19–20 ; प्रेरितों के काम 6:10 ; 1 कुरिन्थियों 2:13

5. यूहन्ना 16:13 आपका मार्गदर्शक

रोमियों 8:14 वह आपकी अगुवाई करेगा।

क. आपका मार्गदर्शन और अगुवाई करेगा :

1. जहां वह आपको सेवा के लिए ले जाना चाहता है।
प्रेरितों के काम 8:29 ; 10:19

2. धार्मिकता में
यूहन्ना 16:8

ख. हमारा शिक्षक और मार्गदर्शक होने के लिए हमें उससे बात करना आवश्यक है :

1	रोमियों 8:6	अपना मन आत्मा पर लगा लें
2	प्रेरितों के काम 1:2	यीशु ने वो कहा जो पवित्र आत्मा ने प्रकट किया।
3	प्रेरितों के काम 8:29	पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस से बात की
4	प्रेरितों के काम 10:19	पवित्र आत्मा ने पतरस से बात की
5	प्रेरितों के काम 13:2	पवित्र आत्मा ने उनसे बात की
6	प्रेरितों के काम 28:25	पवित्र आत्मा ने भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें की । 2 पतरस 1:21
7	इब्रानियों 3:7, 15 ; 4:7	" यदि आज तुम उसकी अवाज़ सुनों।"
8	प्रकाशितवाक्य 2:7,11,17,29	" सुन लें कि आत्मा क्या कहता है।"

6. यूहन्ना 15:26 ; 16:14–15 यीशु की महिमा

क. यीशु की महिमा ⇨ आपके लिए :

यीशु के साथ अधिक घनिष्ठता के सम्बन्ध के लिए पवित्र आत्मा के साथ अधिक घनिष्ठता की अवश्यकता है। वह यीशु को प्रकट करता है।

1	2 कुरिन्थियों 3:7–8 ; 17–18	
2	यूहन्ना 17:24	" मेरे साथ ... कि वे मेरी महिमा को देख सकें।"
3	2 कुरिन्थियों 13:14	इस लिए हमें पवित्र आत्मा के साथ सहभागिता रखनी चाहिए।
4	2 कुरिन्थियों 3:18	जब हम पवित्र आत्मा को प्रभु की महिमा प्रकट करते हुए देखते हैं – वह हमें बदल देता है।

अधिक आत्मा ⇨ अधिक प्रकाशन ⇨ अधिक महिमा ⇨ अधिक बदलाव

ख. यीशु की महिमा ⇨ आप में

1. इफिसियों 5:18 " परिपूर्ण " गिलास के समान नहीं, परन्तु जहाज़ के पाल के समान। यूहन्ना 3:8
2. इफिसियों 5:19 परिवर्त्तन :

क)	मन :	⇨	जैसे आप बात करते हैं
ख)	हृदय :	⇨	गीत
ग)	व्यवहार :	⇨	धन्यवाद देना। पद 20
घ)	स्वभाव :	⇨	दास। पद 22 ; पद 25

3. इफिसियों 3:16–19 "... उसके आत्मा ... प्रेम में ... परमेश्वर की समस्त परिपूर्णता ।"

अधिक आत्मा ⇨ अधिक मसीह ⇨ अधिक प्रेम ⇨ परमेश्वर की समस्त परिपूर्णता ⇨ दूसरों में परिवर्त्तन

4. जब हम पवित्र आत्मा से भर जाते हैं, तब उसका व्यक्तित्व 'आत्मा का फल' हमारे जीवन से प्रकट होगा। गलातियों 5:22–23 ।।

आत्मा का फल

क) प्रेम : इसके द्वारा अकेले ही परमेश्वर की इच्छा हमारे जीवन में पूरी हो सकती है। विश्वासी को प्रेम – प्रेरित, प्रेम – वश, प्रेम – बाध्य होना चाहिए। 2 कुरिन्थियों 5:14
यदि नहीं, तो हम मात्र एक धार्मिक कोलाहल हैं। 1 कुरिन्थियों 13:1

ख) आनन्द : उसके प्रेम में बने रहने का परिणाम आनन्द है। यूहन्ना 15:9–13
नहेमायाह 8:10 प्रभु में आनन्दित रहना ही मेरी सामर्थ्य है। **प्रेम की सामर्थ्य**।
भजन संहिता 16:11 तेरी उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी है।
रोमियों 14:17

ग) शान्ति : उसमें बनें रहने का परिणाम। यूहन्ना 14:27 ; 16:33 ; फिलिप्पियों 4:7 ; कुलुस्सियों 3:15 **प्रेम की शान्ति,** यशायाह 26:3–4 ; रोमियों 14 : 17

घ) धीरज : प्रेम धैर्यवान है। देर तक सहता है। 1 कुरिन्थियों 13:4
प्रेम की सहनशीलता

ड•) दयालुता : प्रेम दयालु है। **प्रेम का व्यवहार**। 1 कुरिन्थियों 13:4 ; इफिसियों 4:32

च) भलाई : **प्रेम का चरित्र**। "अच्छा चरवाहा मैं हूं" युहन्ना 10:11 ; भजन संहिता 106:1
रोमियों 2:7, 10 ; 12:21 ; गलातियों 6:10 ; 1 पतरस 3:11

छ) विश्वस्तता : **प्रेम की प्रतिज्ञा**। मत्ती 25:21 ; लूका 16:10 ; प्रकाशितवाक्य 2:10

ज) नम्रता : **प्रेम की दीनता**। 2 कुरिन्थियों 10:1 ; मत्ती 11:28–29 ; 5:5 ।।

झ) संयम : **प्रेम की विजय**। 1 कुरिन्थियों 9:24–27

" ऐसे कामों के विरुद्ध कोई व्यवस्था नहीं है।" पवित्र आत्मा द्वारा नियंत्रित व्यक्ति को धार्मिकता का जीवन जीने के लिए व्यवस्था की ज़रुरत नहीं है। आत्मा नियंत्रित जीवन का रहस्य रोमियों 12:1–2 में पाया जाता है।
अपना सब कुछ वेदी पर डाल दो, और पवित्र आत्मा आपके हृदय को परमेश्वर के प्रेम से भर देंगे। रोमियों 5:5 ।

ग. दूसरों के लिए आप में सामर्थ्य के द्वारा, यीशु की महिमा।

1. यूहन्ना 14:12, 16

2. 1 कुरिन्थियों 2:4–5
3. ज़कर्याह 4:6 "बल" – स्वाभाविक योग्यता और क्षमता।
" शक्ति " जो कुछ हम हाासिल कर सकते हैं। जैसे : धन , प्रभाव

' आत्मा के वरदान '

1 कुरिन्थियों 12:7–11

क) बुद्धि का वचन — 1 कुरिन्थियों 2:6–14

ख) ज्ञान का वचन — प्रेरितों के काम 5:3 ; 10:11–20 ; युहन्ना 16:13 ; यूहन्ना 4:15–19 ।

ग) विश्वास — गलातियों 3:5 ; प्रेरितों के काम 3:16 ; मत्ती 14:29 ।

घ) चंगाई — प्रेरितों के काम 2:43 ; 3:6–8 ; 5:12–16 ।

ड•) सामर्थ्य के कार्यों की शक्ति — प्रेरितों के काम 19:11–12 ; 8:13

च) भविष्यवाणी — प्रेरितों के काम 11:27–28 ; 21:10–11 ; 1 कुरिन्थियों 14:3, 29–33

छ) आत्माओं की परख — प्रेरितों के काम 16:16–18

ज) भिन्न भिन्न प्रकार की भाषाएं

(1) प्रार्थना की भाषा : यहूदा 20 ;
1 कुरिन्थियों 14:2, 5, 14–15, 18–19 ; इफिसियों 6:18 ।

(2) मनुष्य की भाषा : प्रेरितों के काम 2:4–13 ; 1 कुरिन्थियों 14:21–22

झ) भाषाओं का अर्थ बताना : 1 कुरिन्थियों 14:5, 13

7. वह कायल करता है :

यूहन्ना 16:8–11

8. वह परिवर्त्तन लाता और नया बना देता है।

तीतुस 3:5 ; यूहन्ना 3:5, 8 ; 6:63 ;
1 पतरस 1:23 ; 1 कुरिन्थियों 6:11 ।

9. वह पाप और मृत्यु की शक्ति से स्वतंत्र करता है।

रोमियों 8:2

10. वह उद्धार का निश्चय देता है।

रोमियों 8:16 ; 1 यूहन्ना 5:7, 10

11. वह आपकी मरणहार देह को जीवन देता है।

रोमियों 8:11

12. पवित्र आत्मा हमारी प्रार्थनाओं को सामर्थ्य देता है।

यहूदा 20 ; इफिसियों 6:18 ; रोमियों 8:26–27

13. पवित्र आत्मा, स्तुति और आराधना के लिए प्रेरित करता है।

प्रेरितों के काम 2:11 ; 10:46 ; फिलिप्पियों 3:3 ; इफिसियों 5:18–19 ; यूहन्ना 4:24 ।

14. हम <u>पर</u> पवित्र आत्मा , सेवा के लिए सामर्थ्य देता है।

क) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का कथन । लूका 3:16

ख) पवित्र आत्मा के साथ यीशु का अनुभव। लूका 3:21–22 ; 4:1, 14, 18

ग) पवित्र आत्मा के विषय में यीशु की शिक्षा। यूहन्ना 14:12–18

घ) तीन वर्ष के पश्चात शिष्यों की स्थिति। लूका 22:32
शिमौन विश्वासी था (मत्ती 16:13–17)।
परन्तु उसने नया जन्म नहीं पाया था, जैसे हम इन वचनों को देखेंगे।

ड•) पुनरुत्थान के दिन की घटनाएं। लूका 24:1, 13, 21, 33–51 ।

च) क्रूस के बाद, पवित्र आत्मा का भीतर आना / नया जन्म पाना

लूका 24:45 " उसने उनकी बुद्धि खोल दी कि वे पवित्रशास्त्र को समझें " यीशु के साथ तीन वर्ष रहने के बाद वे अब समझ सके – वे पुनरुत्थान के दिन नया जन्म पाये।

उसकी तुलना करें यूहन्ना 20:22 से, अब दूसरी बार परमेश्वर ने अपनी आत्मा मनुष्य में फूंकी (जैसे आदम के साथ किया था)। पाप क्षमा हुए।
युनानी भाषा में " ग्रहण " के काल का अर्थ केवल " अभी " है। यह बिलकुल स्पष्ट है कि उनका नया जन्म पुनरुत्थान के दिन हुआ था।

छ) पवित्र आत्मा ऊपर। लूका 24:49–51

पवित्र आत्मा " में " और " ऊपर " के बीच के अन्तर को हमें स्पष्ट देखना चाहिए जैसा पवित्र शास्त्र देखता है। सामर्थ्य के लिए पवित्र आत्मा का ऊपर आना बाद के समय के लिए था।

हम लूका के वृत्तान्त को पढ़ते आगे बढ़ते हैं प्रेरितों के काम 1:1–9 । पद 3 में यीशु क्यों चालीस दिनों तक उन्हें शिक्षा देते रहे ? इससे पहिले उन्होंने तीन वर्ष बिताये थे उन्हें शिक्षा देते हुए।

उत्तर : अब उनका नया जन्म हो चुका था – पवित्र आत्मा " उन में " है और वे अब आत्मिक बातों को समझ सकते हैं। (1 कुरिन्थियों 2:14)

पद 8 जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे कि तुम उसके साक्षी बनों। यह पिन्तेकुस्त के दिन हुआ। प्रेरितों के काम 2:1–4
प्रेरितों के काम 1:5 और 2:4 से हम देख सकते हैं कि " पवित्र आत्मा से बपतिस्मा " और " पवित्र आत्मा से भर जाना " दोनों एक ही बात को बताते हैं – एक ही घटना को।

ज) परिणाम और स्पष्टीकरण
प्रेरितों के काम 2:14–18 ; 33, 38–39 ; 4:8, 31,33 ; 6:3,5,8

झ) पवित्र आत्मा का दूसरों पर आना
प्रेरितों के काम 8:5–18 ; 9:17 ; 10:44 ; 19:1–6

ञ) पवित्र आत्मा को पाना
प्रेरितों के काम 5:32 ; लूका 11:11–13

उसके गवाह बनने के लिए सहभागिता / संगति / प्रकाशन / सामर्थ्य ...... आप को और क्या चाहिए?

आपको जितना चाहिए उतना पाईये। कोई अन्त नहीं ... न कोई सीमा...
लूका 11:13

समाप्त